सनातन संस्कृति की एक रूपता का अमीयकुंभ

सीमा सिंह*

अतीत से आजतक विविध काल खंडो में अलग-अलग धर्मो और दासताओं के अनगिनत चक्रों के बीच भी कुंभ की महत्ता और उसकी सार्वभौमिकता ने अतीत से आज तक सनातन से होते आर्य और हिंदू संस्कृति की एक-सूत्रता का एक मात्र केंद्र है। वर्ण व्यवस्था में बंटी हुई हिंदू संस्कृति अलग-अलग समय में आपस में भले ही विखंडित हो, पर प्रत्येक काल खंड में आपसी बिखराव के जाति, वर्ण, वर्ग, और धार्मिक उपेक्षा से इतर संपूर्ण आर्य जनमानस के उद्यात्त रूप का एक मात्र नैसर्गिक केंद्र कुंभ है। देवताओं द्वारा अमृतपान के उपरांत घट में अमृत की एक बूंद की चाह में आज तक अतीत से अतिप्राचीन काल से आज तक नदियों में स्नान की परंपरा से लोगों को पता नहीं वह अमृत की बूंद मिली या नहीं मिली। पर संस्कृति की संपूर्णता उसकी संप्रभुता और उसकी सार्वभौमिकता के लिए कुंभ आज भी अमृत रूपी वरदान सदृश है। यह सनातन संस्कृति का एक ऐसा महान पर्व है जो कर्मकांड के कुत्सित क्रियाकलापों मंदिर में वर्ण विशेष के प्रवेश निषेध संबंधी दुष्कर्मो सहित आर्य संस्कृति के निर्बल पक्ष को एक क्षण में नदी की जल धारा में से विसर्जित कर देता है। एक नदी एक तट दर्जनों घाट, सैकड़ों जातियां अपने अहम् और वहम् को विस्मृत कर सनातन संस्कृति की नदी रूपी अमृत धारा में स्नान कर मोक्ष और मुक्ति की प्राप्ति करते हैं। कुंभ प्राचीन काल से मध्य आधुनिक सहित आगत काल में भी सनातन और आर्य संस्कृति की एकसूत्रता का अमृत रूपी ऐसा प्रवाह है जो सदियों से बहता रहा है। शताब्दियों तक प्रवाहमान रहेगा।

आस्था का सैलाब लिए कुम्भ मेला पूरी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करता है। आध्यात्मिकता का ज्ञान यह समृद्ध करता हुआ ज्योतिष, खगोल-विज्ञान, परंपरा, कर्मकाण्ड, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार को कुम्भ मेला प्रदर्षित करता है। देश-विदेश के कोने कोने से लोग इसमें अपनी भागीदारी प्रस्तुत करते हैं। विविधिता और गहनता मेले का मूल होता है। वैश्विक पटल पर शांति स्थापित करना मेले को विशेष बनाता है। ई. 2017 में यूनेस्कों ने कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक सूची में स्थान दिया। कुंभ का इतिहास हिंदू धर्म के ग्रंथों में बेहद प्राचीन है।

* असिसटेंट प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

पौराणिक कथाओं में कुंभ

कुंभ का शाब्दिक अर्थ घड़ा, सुराही, बर्तन है। यहाँ कुंभ से तात्पर्य अमृत कलश से है। वैदिक ग्रंथों में कुम्भ शब्द का प्रयोग किया जाता था। मेला शब्द का अर्थ है समूह में लोग एकजुट होकर, शामिल होकर, मिलना या फिर उत्सव मनाना। ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिंदू ग्रंथों में यह पाया जाता है। सम्पूर्ण में यदि देखे तो कुंभ मेले का अर्थ हुआ ''एक सभा मिलन जहाँ अमृत हो।''

कुंभ को लेकर कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं जिनमें देव और दानवों द्वारा समुद्रमन्थन की कथा सबसे मान्य मानी जाती है। देव और दावनों के बीच हुए युद्ध के परिणाम स्वरूप अमृत की बूंदे धरती पर चार स्थानों पर गिरी- प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिका कथा है कि महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इंद्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। इसके उपरांत सभी देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उनसे सहायता मांगी। भगवान विष्णु ने सभी से कहा कि वह दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मंथन करें और अमृत प्राप्त करें। अमृत निकलते ही देवताओं ने इन्द्रपुत्र जयन्त को इशारा किया और वह अमृत-कलश लेकर उड़ गया। दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य के कहने पर दैत्य जयन्त के पीछे चले गए। बीच रास्ते में जयन्त पकड़ा गया जिसके बाद अमृत कलश पर अधिकार के लिए देव-दानवों में बारह दिन लगातार युद्ध हुआ। देवताओं के बारह दिन मनुष्य जाति के बारह वर्ष के बराबर होते हैं। इसी कारण कुम्भ के साथ बारह वर्ष जुड़ा। इन बारह कुम्भ में चार पृथ्वी पर होते हैं और बांकि आठ देवलोक में होते है। कलह शांत होने पर भगवान ने मोहिनी सूरत धारण किया और सभी को अमृत बांटकर पिलाया। इन सबसे दोनों का युद्ध समाप्त हुआ।

कुंभ का योग

चन्द्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी उस समय की वर्तमान राशियों की रक्षा करने वाले चन्द्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं वह समय कुंभ का योग बनता है। यानि जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चन्द्रमा एवं बृहस्पति का योग होता है उसी वर्ष, उसी राशि पर जिस-जिस स्थान पर अमृत बूंद गिरी थी वहाँ कुम्भ पर्व होता है।

- बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।
- बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में गोदावरी तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।
- बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में शिप्रा तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।
- खगोल विज्ञान के अनुसार मकर संक्रांति के दिन यह प्रारंभ होता है। मकर सक्रांति के दिन होने वाले योग को कुम्भ स्नान योग कहा जाता है। ऐसा माना जाात है कि इस दिन ईश्वर के दरबार खुले रहते हैं और इस मंगलकारी दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च गुणों की प्राप्ति होती है। इसमें स्नान करना स्वर्ग दर्शन के समान है।

कुंभ मेला हिंदुओं का धार्मिक त्योहार है जो प्रत्यक बारह वर्ष पर आता है। इलाहाबाद कुंभ गंगा और यमुना नदियों के संगम स्थान पर मनाया जाता है। आज यह दुनिया का सबसे बड़ा सामूहिक आयोजन बन गया है जो लाखों लोगों को अपनी ओर खींचता है। यह कुछ हफ्ते चलता है जिस दौरान तीर्थयात्री इन शुभ नदियों में स्नान करते हैं। हिंदू धर्म से जुड़े कई अनुयायी यहाँ समूह में एकत्र होते हैं। पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से आयोजन की सफलतापूर्वक शुरुआत हुई उसने कुंभ को और भी अधिक प्रसिद्धि दिलायी।

असंख्य दीपों से कुंभ के दौरान तट जगमगा उठते हैं। कुंभ शास्त्र, गृहस्थ, साधन का समागम है। हिंदुओं में यह सर्वाधिक लोकप्रिय पर्व है। आस्था का होना बहुत आवश्यक है। कुंभ में तीर्थयात्रियों को विभिन्न मठों से जुड़े शंकराचार्यों, महामंडलेश्वर

और साधु संतों को एक स्थान पर देखने का अवसर मिलता है। ऐतिहासिक कालखंड में ऐसा साक्ष्य मिलता है राजा हर्षवर्धन के कार्यकाल 660 ईस्वी में कुंभ के संकेत मौजूद हैं। जहाँ नदियों का मुख्य सम्मेलन होता है वहाँ ऐसा माना जाता है कि राजा हर्षवध न अपनी समस्त संपत्तियों को इस सम्मेलन में बांट देते थे। प्रसिद्ध यात्री ह्वेन त्सांग ने अपनी यात्रा वृत्तांत में कुंभ का उल्लेख किया है। इस यात्रा वृत्तांत में ह्वेन त्सांग ने राजा हर्षवर्धन के गुणों का बखान भी किया है।

भारत देश के मूल और उसकी संस्कृति को समझने का अनूठा मौका यह प्रदान करता है। कुंभ मेले में किसी को किसी भी प्रकार के निमंत्रण की आवश्यकता नहीं है। हर वर्ग का व्यक्ति इसमें अपनी सहभागिता प्रस्तुत कर सकता है। करोड़ों तीर्थ यात्री देश-विदेश से इसका हिस्सा बनते हैं। प्राथमिक स्नान के अलावा विभिन्न वेदों, यज्ञों में उच्चारण, भक्ति गीत, भक्ति नृत्य, आध्यात्मिक कथाओं पर विभिन्न मंचन, वेद-मंत्र उच्चारण, प्रार्थनाओं का सुंदर समागम होता है। विभिन्न सिद्धांतों पर वाद-विवाद साधु और संतों के द्वारा इस मौके पर होता है। यह अपना ज्ञान जगत् को उपलब्ध कराते हैं।

मानवता की अमूल्य धरोवर है कुंभ, जहाँ तीर्थयात्रियों, कल्पवासियों, स्नानार्थियों का संगम होता है। यह आस्था का सैलाब पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करता है। लगभग पचास दिन चलने वाले इस मेले में विभिन्न तरह के कर्मकांड होते हैं। आरती, स्नान, कल्पवास, दीपदान, त्रिवेणी संगम पर परिक्रमा करते हैं। भारत में प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को ईश्वर के तुल्य माना जाता है। नदी, पर्वत, वृक्ष आदि की आराधना आदिकाल से होती आ रही है। नदियां यहाँ आस्था का केंद्र पुरातत्त्व काल से रही हैं। विभिन्न नदियों पर आरती के माध्यम से इसे हम सनातन काल से देखते आ रहे हैं। इन आरतियों में विभिन्न जनसमूह शामिल होता है। इसी प्रकार गंगा और यमुना के तटों के अलावा संगम तट पर भी सुबह और शाम की आरती होती आ रही है।

अखाड़ों के साधु-संत

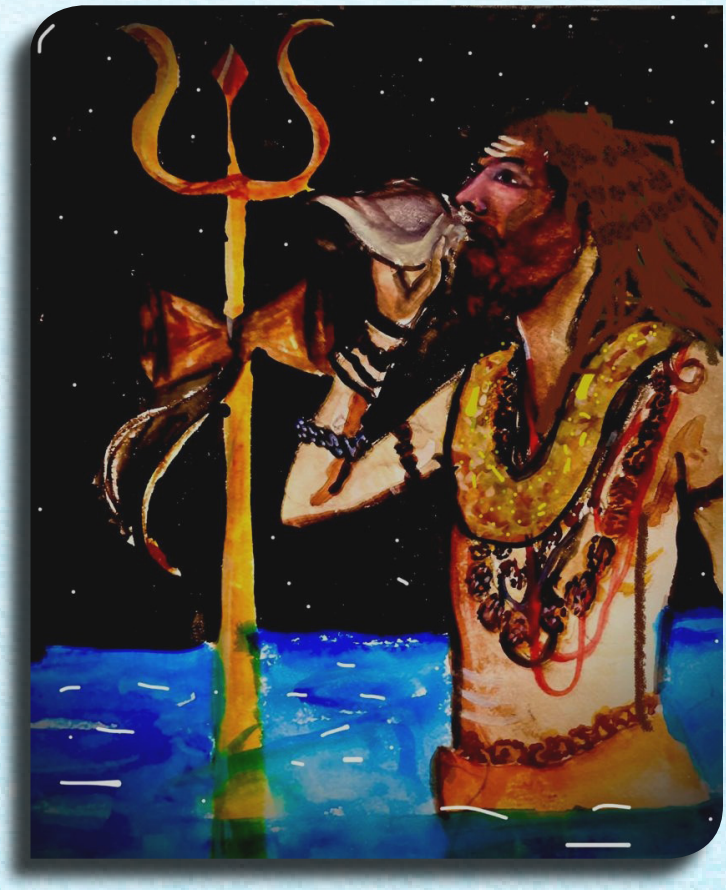

आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना करना अखाड़ों का मुख्य उद्देश्य है। अलग-अलग संगठनों में बंटे अखाड़े एकता के प्रतीक हैं। अखाड़ा शब्द अखण्ड शब्द से बना है। वैष्णव अखाड़े के इष्ट देव भगवान विष्णु हैं। आदि गुरु शंकराचार्य ने सनातन धर्म की रक्षा हेतु अखाड़ों की स्थापना की। उदासीन अखाड़ा इसकी तीसरी श्रेणी है। सिक्ख सम्प्रदाय के आदि गुरु श्री नानकदेव के पुत्र श्री चन्द्रदेव जी को उदासीन मत का प्रवर्तक माना जाता है। इस पन्थ के अनुयायी मुख्यतः प्रणव अथवा ओम् की उपासना करते हैं। अखाड़ों के साधु-संत-शास्त्र और शस्त्र विद्या में पारंगत होते हैं। अलग-अलग संगठनों में बंटे अखाड़े एकता के प्रतीक हैं। अखाड़ा मठों में नागा सन्यासियों का एक विशेष स्थान है। वर्तमान में तीन श्रेणियों में विभाजित है अखाड़े। शैव अखाड़े के इष्ट भगवान शिव हैं। अखाड़ों के प्रमुख आचार्य महामण्डलेश्वर के रूप में जाने जाते हैं। अखाड़ों में नागा सन्यासियों का विशेष महत्त्व है। प्रत्येक नागा संन्यासी किसी न किसी अखाड़े से संबद्ध होता है। शास्त्र और शस्त्र इसके मूल में होता है। वर्तमान में अखाड़े तीन श्रेणियों में विभक्त हैं। मेले में यह अखाड़े आकर्षण का केंद्र बनते हैं। मेले के दौरान इन अखाड़ों की भव्यता अद्भुत होती है। अखाड़ों को व्यस्थित करने के लिए एक समिति का निर्माण किया गया है जिसमें मुख्यतः

पांच लोग शामिल होते हैं। जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश व शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। अखाड़ों में संख्या के अनुसार सबसे बड़ा अखाड़ा जूना अखाड़ा है उसके बाद निरंजनी अखाड़ा और उसके बाद महानिर्वाणी अखाड़े का स्थान आता है। उनके अध्यक्ष महामंडलेश्वर के रूप में जाने जाते हैं। शाही स्नान के समय यह सभी महामंडलेश्वर शाही रथों पर आसीन होते हैं। उनके सचिव हाथी पर होते हैं। आज इन अखाड़ों को श्रद्धाभाव से देखा जाता है। मेले के समय इन अखाड़ों की भव्यता देखते ही बनती है।

शाही स्नान का महत्त्व

शाही स्नान कुंभ मेले का केन्द्रीय आकर्षण होता है। प्रयागराज के अति प्राचीन निवासी प्रयागवाल होते हैं। कर्मकाण्डों में शाही स्नान का विशेष महत्त्व है। कुंभ मेले में आम लोग और संत मिलकर पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। नदियों में स्नान का अर्थ है कि व्यक्ति इसमें नहाकर सभी पापों को धो देता है। स्वयं को अपने-अपने पूर्वजों को जीवन-मरण के चक्र से यह मुक्त करता है और मोक्ष की उसे प्राप्ति होती है। स्नान के साथ-साथ भक्तगण नदी के तट पर पूजा पाठ भी करते हैं और साधु संतों के साथ मिलकर सत्संग भी करते हैं। कुंभ का इतिहास बेहद प्राचीन और अनादि काल से चलता आ रहा है। शाही स्नान कुंभ मेले का प्रमुख स्नान है महोत्सव का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है। पचास दिन चलने वाले इस कुंभ का पहला स्नान मकर संक्रांति से शुरू होता है यह इसका पहला स्नान का दिन होता है। कुंभ में शाही स्नान को राजयोगी स्नान के नाम से भी जानते हैं। शाही स्नान के बाद ही आमजन को स्नान करना होता है।

कुंभ मेले में कल्पवास का महत्त्व

कुंभ मेले में कल्पवास का प्रमुख स्थान होता है। संगम के तट पर ध्यान और वेदों के अध्ययन को कल्पवास कहते हैं। इसका विधान हजारों वर्षों से चला आ रहा है। पद्मपुराण और ब्रह्मपुराण के अनुसार कल्पवास की अवधि पौष मास के शुक्लपक्ष की एकादशी तक है। ऋषियों ने गृहस्थों के लिए कल्पवास का विधान निर्धारित किया क्योंकि वह जंगलों में ध्यान नहीं कर सकते हैं। इस दौरान जो भी गृहस्थ संकल्प लेकर आता है वह इस समय पर्णकुटि में रहता है और ध्यान करता है। व्रत, उपवास, दानपूजन, सत्संग और तर्पण का बहुत महत्व इसमें होता है। ऐसी मान्यता है कि जो कल्पवास की प्रतिज्ञा करता है वह अगले जन्म में राजा का जन्म लेकर पैदा होता है। लेकिन जो मोक्ष की संकल्पना लेकर कल्पवास करता है उसे जरूर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मेले में कई सुविधाएं उपलब्ध है

कुंभ में कई तरह की सुविधाएं लोगों को उपलब्ध है। युद्ध और प्राकृतिक आपदा के लिए पहले से तैयार शिविर यहाँ मौजूद है। अपने तीर्थ यात्रियों के लिए यह कुंभ त्वरित सुविधाएं तैयार करता है। रहने से लेकर, खाने और सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति यहाँ मौजूद है। बिजली, पानी सभी की व्यवस्था वहाँ घाट के समीप बने अस्थायी आवास पर उपलब्ध होती है। यहाँ तीर्थयात्रियों को विशिष्ट स्थान दिया जाता है। कुंभ के समय घाट पर पूरा का पूरा शहर तैयार हो जाता है। कई व्यवसायिक कंपनियां आगंतुकों के लिए निःशुल्क सुविधाए उपलब्ध कराती है। कुछ वर्ष पहले के प्रयागराज और आज के प्रयागराज में बहुत अंतर आ चुका है। हर दीवार को यहाँ के कलाकारों ने अपनी आकृतियों से आकर्षित बना दिया है। पेंटिंग, स्लोगन से दीवारें पटी पड़ी हैं। इस स्थानीय मॉडल ने सभी को अपनी ओर आकर्षित किया।

बहते जल में दीपों की चमक और आसमान में रात के समय चमकते तारों के बीच श्रद्धालु अपने आराध्य में खो जाता है। इसका आयोजन आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करता है। सनातन धर्म को समझने के लिए इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। आस्था, विश्वास और सांस्कृतिक एकता का यह पर्व अपनी विराटता लिए इसी प्रकार पचास दिन समाप्त करता है।

❑❑❑❑